इकाई 21 उपनिवेशवाद

इकाई की रूपरेखा

21.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- उपनिवेशवाद की आधारभूत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे;
- साम्राज्यवादी देश (मेट्रूपोलिस) और उपनिवेश के आपसी रिश्ते को समझ सकेंगे; और
- उपनिवेशवाद के विभिन्न चरणों और उनकी खास विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

21.1 प्रस्तावना

आधुनिक यूरोप का इतिहास विश्व का इतिहास बन गया। 18वीं शताब्दी के बाद प्रमुख यूरोपीय शक्तियों ने पूरी दुनिया में अपने उपनिवेश स्थापित कर लिए। पूंजीवाद पूरी दुनिया पर छा गया। बाजारों और कच्चे माल के स्रोतों पर एकाधिकार स्थापित करने से इसे और भी बल मिला। 19वीं शताब्दी तक आते-आते एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देश यूरोपीय शक्तियों के औपनिवेशिक क्षेत्र बन गए। इन औपनिवेशिकों क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए प्रतिद्वन्द्वी साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच अनगिनत युद्ध हुए। यूरोप शक्ति के कई आपसी टकराव वाले केंद्रों में विभाजित हो गया। यह समझौते की पद्धति के तहत हुआ तथा इसकी जरूरत उन साम्राज्यवादी शक्तियों को महसूस हुई जिनका प्रवेश पूंजीवादी व्यवस्था में देर से हुआ और वे भी इस व्यवस्था से उत्पन्न लाभों में अपना हिस्सा चाहते थे। उपनिवेशों की इस अंधी दौड़ में 19वीं और आरंभिक 20वीं शताब्दी में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिद्वंद्विता और तनाव का माहौल बना।

उपनिवेशों में मौजूद व्यवस्था को उपनिवेशवाद का नाम दिया गया। पिछली आधी शताब्दी में पूरी दुनिया में इस व्यवस्था की अवनति हुई और यह टूटने लगी। साम्राज्यों के हाथ से निकलने के कारण प्रमुख साम्राज्यवादी शक्ति ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका पर आश्रित एक तीसरे दर्जे का देश रह गया। यह बड़ा ही रोचक तथ्य है कि उपनिवेशवाद की समाप्ति के साथ दुनिया की तस्वीर पूरी तरह बदल गई ठीक वैसे ही जैसे इसकी स्थापना के समय हुआ था। उपनिवेशों को आजादी हासिल हुई और इसके फ़लस्वरूप दुनिया की राजनीति में तीसरी दुनिया की एक महत्वपूर्ण भूमिका हो गई। उत्तर-औपनिवेशिक शब्दावली का इस्तेमाल इस बात

का द्योतक है कि उपनिवेशवाद से गुजरे हर देश में एक समानता यह है कि उनका एक औपनिवेशिक अतीत था। यह औपनिवेशिक अतीत आज भी उनके वर्तमान को प्रभावित करता है।

इस इकाई में हमने आधुनिक पूंजीवादी युग में उपनिवेशवाद की प्रकृति पर विचार-विमर्श किया है। हमने उपनिवेशवाद और आधुनिक साम्राज्यवादी देश (मेट्रोपोलिस) के बीच के संबंधों और उपनिवेशवाद के चरणों पर विशेष बल दिया है। हमने उपनिवेशवाद के विभिन्न रूपों और किसी खास उपनिवेश में इसके प्रभाव पर अलग-अलग विचार करने के बजाय हमने उपनिवेशवाद पर एक परिघटना के रूप में विचार किया है। अगली इकाई में हम तीन देशों का उदाहरण सामने रखेंगे और अध्ययन करेंगे।

21.2 उपनिवेशवाद क्या है ?

'उपनिवेशवाद' की प्रकृति का अध्ययन करने से पहले, आइए, इस शब्द के इतिहास पर विचार किया जाए।

उपनिवेशवाद पर सबसे पहले मार्क्स और एंगल्स ने टिप्पणी की थी। उन्होंने आयरलैंड पर औपनिवेशिक (वर्चस्व) आधिपत्य के बारे में लिखा था। मुख्य रूप से आर्थिक दृष्टि से उपनिवेशवाद की पहली आलोचना 19वीं शताब्दी के अंत में आरंभिक भारतीय राष्ट्रवादियों, जैसे दादाभाई नौरोजी, महादेव रानाडे, रमेशचंद दत्त और अन्य लोगों, ने की थी। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा धन बाहर भेजे जाने को उन्होंने धन के अपवहन की संज्ञा दी थी। ईस्ट इंडिया कम्पनी लूट खसोट कर, कई प्रकार के शुल्क लगाकर, या सरकारी खर्चे के नाम पर तथा पूंजी का निजी हस्तांतरण कर भारत का धन इंग्लैंड भेजती थी। इसे ही राष्ट्रवादियों ने धन का अपवहन कहा। हॉबसन ने 1902 में अपनी पुस्तक *इम्परियलिज्म* प्रकाशित की। इस परिघटना को समझने में वित्तीय पूंजीवाद पर रूडोल्फ हिल्फरडिंग के लेखों, पूंजीवादी संग्रहण पर रोजा लक्जेमबर्ग की पुस्तक और लेनिन की *इम्परियलिज्म, द हाइएस्ट स्टेज ऑफ कैपिटलिज्म* से काफी सहायता मिली। लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, इन्डोनेसिया आदि में 1920 और 1930 में साम्राज्यवादी संबंधी अध्ययन किए गए जिससे इस परिघटना को समझने के लिए नए दृष्टिकोण सामने आए। 1960 के दशक के सफल स्वाधीनता आंदोलनों और क्यूबाई और अल्जीरियाई क्रांतियों के कारण उपनिवेशवाद पर कई किताबें प्रकाशित हुईं। इस क्षेत्र में आन्द्रे गुन्डर फ्रैंक, सी फर्टाडो, थियोडोरे, डोस सैन्टोसा, पाउल पेबिस, पाउल बारन, समीर आमीन, इमैनूअल वारलएस्टिन, आरघिरी इमैनूअल और एफ. कारडोसो का योगदान उल्लेखनीय है। डिपेंडेंसी स्कूल की एक धारा के विचारकों के अनुसार उपनिवेशों के राजनैतिक रूप से स्वतंत्र हो जाने के बावजूद उनकी आर्थिक निर्भरता तब तक बनी रहेगी जब तक पूंजीवादी व्यवस्था रहेगी क्योंकि उपनिवेशवाद के अधीन उनका अल्प विकास हुआ है। उनके अनुसार बुर्जुआ वर्ग आर्थिक विकास का जिम्मा अपने ऊपर लेने में असक्षम है। समाजवादी क्रांति के द्वारा ही निर्भर अर्थव्यवस्थाएं स्वतंत्र हो सकती हैं। भारत के उदाहरण ने डिपेंडेंसी स्कूल की विचारधारा पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया जहां स्वतंत्र बुर्जुआ वर्ग ने पूंजीवाद का विकास किया।

इमैनूअल वालरस्टीन के वर्ल्ड सिस्टम स्कूल ने एक अलग विचारधारा रखी। उन्होंने एक पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था की बात की और इसे केंद्र और परिधि में विभाजित किया। इस विशिष्ट विचारधारा की अनेक विशेषताएं हैं:

1) केंद्रीय अर्थव्यवस्थाओं से उच्च मूल्य उत्पाद जुड़े होते हैं जबकि गौण अर्थव्यवस्था में निम्न प्रौद्योगिकी और निम्न मजदूरी शामिल होती है।

2) असमान विनिमय या निर्यात अधिशेष दूसरी विशेषता है।

3) मुख्य राज्य मजबूत होते हैं जबकि परिधीय राज्य कमजोर होते हैं।

4) एक कमजोर देशी बुर्जुआ वर्ग।

5) इसकी अर्थव्यवस्था पर विदेशी पूंजी का वर्चस्व पांचवी विशेषता है।

वर्ल्ड सिस्टम सिद्धांत ने अर्ध-परिधीय की एक तीसरी श्रेणी का भी उल्लेख किया। इसमें राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय बाजार में राज्य के अपेक्षाकृत अधिक नियंत्रण वाले देशों का उल्लेख किया गया। आर्थिक राष्ट्रवाद

इन राज्यों की प्रमुख विशेषता थी। विश्व व्यवस्था के इस सिद्धांत के अन्तर्गत उपनिवेश की स्थिति में सुधार की गुंजाइश है।

कैबरल, फ्रैंज फेनन और एडवर्ड सेड ने उपनिवेशवाद के सांस्कृतिक पक्षों पर विचार किया है। विपनचंद्र ने औपनिवेशिक ढांचे, औपनिवेशिक आधुनिकीकरण, उपनिवेशवाद के चरणों और औपनिवेशिक राज्य का अध्ययन किया है।

21.3 उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद

उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक तरफ से देखने से यह उपनिवेशवाद है दूसरी तरफ से देखने से साम्राज्यवाद। आधुनिक साम्राज्यवादी देश (मेट्रोपोलिस) की तरफ से देखने से यह साम्राज्यवाद है जबकि उपनिवेश की दृष्टि से देखने पर यह उपनिवेशवाद है। ब्रिटेन में औद्योगिक पूंजीवाद के समान ही उपनिवेशवाद भी आधुनिक परिघटना है। दोनों का विकास साथ-साथ हुआ है। उपनिवेश के आधुनिक ऐतिहासिक विकास में उपनिवेशवाद एक विशिष्ट ऐतिहासिक चरण या युग है जिसने परम्परागत अर्थव्यवस्था और आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के बीच हस्तक्षेप किया। यह पूर्ण रूप से एक सुसंगठित और विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था है जिसमें अर्थव्यवस्था और समाज पर विदेशी पूंजीपति वर्ग का नियंत्रण होता है। उपनिवेश में यह व्यवस्था एक आश्रित और अधीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और बौद्धिक संरचना के तहत क्रियाशील होती है। इस संरचना का रूप पूंजीवाद के ऐतिहासिक विकास के बदलते परिवेशों से प्रभावित होने के कारण अलग-अलग होता है।

औपनिवेशिक समाजों के अधिकांश विद्वान उपनिवेशवाद को ठीक से समझ नहीं सके। एक विचार यह प्रचलित है कि औपनिवेशिक समाज एक परम्परागत समाज था जहां उत्पादन के पुराने संबंध मौजूद थे। यहां केवल विदेशी राजनैतिक आधिपत्य ही स्थापित हुआ। परंतु उपनिवेशवाद औपनिवेशिक नीति मात्र नहीं है। यह मात्र राजनैतिक आधिपत्य भी नहीं है। यह एक ढांचा है। एक अन्य धारणा के अनुसार उपनिवेशवाद एक संक्रांतिकालीन समाज था जो आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहा था और धीरे-धीरे इसे विकसित पूंजीवादी समाज में परिणत हो जाना था। क्या सचमुच उपनिवेशवाद का संबंध केवल आधुनिकीकरण से है ? क्या उपनिवेश आधुनिक राज्यों में परिणत हुए ? निश्चित रूप से नहीं। कुछ वामपंथी लेखक 'प्रतिबंधित विकास' की बात करते हैं और उनका मानना है कि उपनिवेशवाद एक अधूरा पूंजीवादी विकास था। अर्थव्यवस्था में उपस्थित पूर्व-पूंजीवादी तत्वों ने पूर्ण पूंजीवादी विकास को बाधित किया। यह भी माना गया कि पूंजीवादी व्यवस्थाओं से अलग जो कुछ भी था वह पूर्व-पूंजीवाद था। अधिकांश लेखक ऐसे औपनिवेशिक समाज की कल्पना नहीं कर सकते थे जो न तो पूंजीवादी हो और न ही पूर्व-पूंजीवादी। उदाहरण के लिए भारत में औपनिवेशिक शासन के तहत जिस कृषीय संबंध का विकास हुआ वह ब्रिटिश शासन की उपज था और उसकी प्रकृति औपनिवेशिक थी। भारत में ब्रिटिश नमूने पर पूंजीवादी कृषि के विकास के प्रयत्न का यह एक विकृत परिणाम था। यह मौलिक स्वरूप की भोंड़ी नकल थी।

उपनिवेश विश्व पूंजीवादी व्यवस्था का एक अन्तरंग हिस्सा बन गया परंतु इस विलयन से उपनिवेश में पूंजीवाद अर्थव्यवस्था के विकास में कोई मदद नहीं मिली। कई विद्वानों का मानना था कि उपनिवेश का विकास पूंजीवादी ढांचे के तहत ही संभव था। यह भी विश्वास था कि विश्व व्यवस्था होने के कारण पूंजीवाद सभी राष्ट्रों को बुर्जुआ व्यवस्था अपनाने को बाध्य करेगा। हालांकि यह महसूस नहीं किया गया कि उपनिवेश आधुनिक साम्राज्यवादी देशों (मेट्रोपोलिस) का प्रतिबिंब नहीं बन पाए। जिस प्रकार आधुनिक साम्राज्यवादी देशों में पूंजीवादी व्यवस्था विकसित हुई उस प्रकार उपनिवेशों में उसका विकास नहीं हो सका। अतः उपनिवेशों में पूंजीवाद की शुरुआत तो हुई परंतु पूंजीवाद का विकास नहीं हुआ। पुराने ढांचे नष्ट कर दिए गए परंतु नए ढांचों ने विकास को प्रोत्साहित नहीं किया। इसके बजाय इस व्यवस्था ने विकास के मार्ग को अवरुद्ध किया। उपनिवेश औद्योगिक क्रांति में हिस्सा नहीं ले सके। इस प्रकार साम्राज्यवाद ने उत्पादन के कई क्षेत्रों में पूंजीवादी संबंध तो विकसित किए परंतु वहां पूंजीवाद का विकास नहीं हुआ। उपनिवेश में उत्पादक शक्तियों का विकास नहीं हुआ। इस प्रकार पूंजीवाद की तरह उपनिवेशवाद सामाजिक विकास का बढ़ा हुआ चरण नहीं था। यह आधुनिक साम्राज्यवादी पूंजीवाद की प्रतिछवि था परंतु यह छवि नकारात्मक थी और इसमें

इसका गैर विकासात्मक पक्ष प्रतिबिंबित हुआ था। पूंजीवाद उत्पादक और सामाजिक शक्तियों का विकास करता है। दूसरी ओर उपनिवेशवाद उत्पादक और सामाजिक शक्तियों का विकास नहीं करता। विकास के इस अभाव के कारण इसमे आन्तरिक अन्तर्विरोध पैदा होते हैं।

21.4 उपनिवेशवाद : उत्पादन की एक विधि या एक सामाजिक संघटन

कुछ लेखक उपनिवेशवाद को उत्पादन का एक विशिष्ट तरीका मानते हैं। हम्ज़ा अलावी उपनिवेशवाद को *'औपनिवेशिक पूंजीवाद'* की संज्ञा देते हैं। *ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आन्तरिक बिखराव और बाह्य जुड़ाव* तथा *उपनिवेश में नहीं बल्कि साम्राज्यवादी आधुनिक देश में पूंजी के विस्तारित पुनरुत्पादन की प्राप्ति* उपनिवेशवाद की दो खास विशेषताएं हैं।

बिपनचंद्र के अनुसार उपनिवेशवाद एक सामाजिक संघटन है जिसमें कई प्रकार के उत्पादन के तरीके मौजूद रहते हैं जैसे सामंतवाद, दास प्रथा, बंधुआ प्रथा, छोटे स्तर पर वस्तुओं का उत्पादन, व्यापारी और सूदखोरों द्वारा शोषण और कृषीय तथा औद्योगिक और वित्तीय पूंजीवाद। उपनिवेशवाद में विभिन्न प्रकार के उत्पादन के तरीकों के जरिए सामाजिक अधिशेष का उपयोग किया जाता है। उपनिवेश के अधिशेष का उपयोग करने का संबंध आधुनिक साम्राज्यवादी देश (मेट्रोपोलिस) के बुर्जुआ वर्ग के उत्पादन के साधनों के स्वामित्व से नहीं है बल्कि इसका संबंध राज्य शक्ति पर नियंत्रण से है। दूसरी ओर पूंजीवाद के अन्तर्गत अधिशेष का उपयोग उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के आधार पर होता है।

उत्पादन के विभिन्न तरीकों की अवधारणा से हमें इस बात का विश्लेषण करने में मदद मिलती है कि किस प्रकार उपनिवेशवाद ने विभिन्न सामाजिक स्तरों के बीच वर्गीय प्रतिरोध को स्वरूप प्रदान किया। इससे हमें समाज के प्रमुख वर्गों की भूमिकाओं को पहचानने और किसी भी चरण में आधारभूत अन्तर्विरोध को समझने में मदद मिलती है। जब हम उपनिवेशवाद को उत्पादन के एक तरीके के बजाय एक सामाजिक संघटन के रूप में देखते हैं तब हम वर्गीय आधारों की अपेक्षा सामाजिक आधार पर प्राथमिक अन्तर्विरोधों को देखने में सफल होते हैं। इसीलिए औपनिवेशिक शक्ति के खिलाफ वर्ग संघर्ष नहीं हुआ बल्कि एक राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई। यह आंदोलन आरंभ से ही आर्थिक न होकर राजनैतिक था। वर्गों ने वर्ग संगठनों के जरिए उपनिवेश विरोधी आंदोलन में हिस्सा नहीं लिया बल्कि उन्होंने जनता के एक हिस्से के रूप में भाग लिया।

21.5 उपनिवेशवाद की आधारभूत विशेषताएं

उपनिवेशवाद की निम्नलिखित चार आधारभूत विशेषताएं हैं :

1) विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के साथ उपनिवेश को जोड़ना जिसमें उपनिवेश की स्थिति अधीनता की होती है। आधुनिक साम्राज्यवादी देश की अर्थव्यवस्था की जरूरत और इसके पूंजीपति वर्ग उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था और समाज के आधारभूत मुद्दों का निर्धारण करते थे। विश्व बाजार से सम्पर्क की अपेक्षा यह अधीनता ज्यादा निर्णायक थी। हालांकि स्वतंत्र पूंजीवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्थाएं भी विश्व बाजार से जुड़ीं हुई थीं।

2) आरघिरी इमैनूएल और समीर अमीन ने उपनिवेवाद को *औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के आन्तरिक बिखराव और असमान विनिमय* की अवधारणाओं में समेट दिया। उनका यह मानना था कि विश्व बाजार और साम्राज्यवादी वर्चस्व के माध्यम से उपनिवेशों के कई निष्क्रिय हिस्से सक्रिय होकर केंद्रीय अर्थव्यवस्था से जुड़ जाते हैं। उपनिवेशों के कृषि क्षेत्र का संबंध इसके औद्योगिक क्षेत्र से नहीं होता बल्कि यह विश्व पूंजीवाद बाजार और मेट्रोपोलिस के बाजार से होता है। मार्क्स और एंगल्स ने इसी शोषणात्मक अन्तरराष्ट्रीय श्रम विभाजन की प्रक्रिया का उल्लेख किया था। इन आधुनिक साम्राज्यवादी देशों के पास उच्च प्रौद्योगिकी, उच्च उत्पादकता, और ऊंची मजदूरी की दर होती थी जबकि उपनिवेशों के पास निम्न प्रौद्योगिकी, निम्न उत्पादाकता और निम्न मजदूरी दर होती थी। इसी प्रकार उपनिवेश कच्चे माल का उत्पादन करते थे जबकि आधुनिक साम्राज्यवादी देश तैयार माल का निर्माण करते थे।

19 वीं शताब्दी में भारत में रेलवे का विकास भारतीय उद्योग के लिए नहीं बल्कि ब्रिटिश उद्योग के हितों की रक्षा करने के लिए किया गया था।

3) *धन का अपवहन* उपनिवेशवाद की तीसरी विशेषता है। इसके जरिए अधिशेष का एकतरफा हस्तांतरण होता है और उपनिवेशों से साम्राज्यवादी देशों की ओर धन का बहाव होता है। आरंभिक भारतीय राष्ट्रवादियों ने इस पर बल दिया था। सैनिक और असैनिक सेवाओं पर औपनिवेशिक राज्य के व्यय का एक बड़ा हिस्सा भी अधिशेष के बाह्य अपवहन का एक उदाहरण था। अत: अधिशेष का उत्पादन उपनिवेशों में होता था परंतु उसे विदेश भेज दिया जाता था। हमजा आलवी ने इस प्रक्रिया को *विकृत विस्तरित पुनरुत्पादन* (डिफॉर्म्ड एक्सटेंडेड रिप्रोडक्शन) कहा है।

4) *विदेशी राजनैतिक आधिपत्य* या औपनिवेशिक राज्य की मौजूदगी और भूमिका इसकी चौथी आधारभूत विशेषता है।

बोध प्रश्न 1

1) उपनिवेशवाद क्या है ? लगभग 50 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) लगभग 100 शब्दों में उपनिवेशवाद की आधारभूत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

21.6 औपनिवेशिक राज्य

औपनिवेशिक राज्य में औपनिवेशिक क्या है ?

कुछ लोगों के विचार में यह एक वर्ग के बजाए सम्पूर्ण समाज के शोषण का एक माध्यम है। औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के निर्माण और कार्य में औपनिवेशिक राज्य अहम और अभिन्न भूमिका निभाता है। उपनिवेश के नियंत्रण और शोषण करने में गृह देश के पूंजीपति वर्ग की बड़ी भूमिका रहती है और राज्य उनके हाथों में खिलौना होता है। औपनिवेशिक राज्य समग्र रूप से मातृ देश के पूंजीपति वर्ग के दीर्घावधि हितों को पूरा करता है। यह बुर्जुआ वर्ग के अलग-अलग प्रतिस्पर्द्धा से युक्त हितों का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। इसके विपरीत पूंजीवाद में राज्य किसी एक शक्तिशाली वर्ग के हाथ में खिलौना होता है।

उपनिवेशवाद विदेशी शासक वर्ग और सम्पूर्ण औपनिवेशिक जनता के बीच का संबंध है। उपनिवेशवाद के तहत देशी सामाजिक वर्ग शासक वर्ग में शामिल नहीं होते। उपनिवेश के सभी देशी वर्ग अधीनस्थ होते

हैं – यहां तक कि समृद्ध वर्ग भी उपनिवेशवादी व्यवस्था में कनिष्ठ साझेदार या अधीन साझेदार नहीं होते हैं। किसी भी साम्राज्यवादी देश के बुर्जुआ वर्ग के लिए उनके हितों की बलि चढ़ाई जा सकती है। उदाहरण के लिए राज्य ने कारखाना अधिनियम बनाया जिसका देशी बुर्जुआ वर्ग ने स्वागत नहीं किया क्योंकि इससे विदेशी, आयात की गई वस्तुएं भारतीय वस्तुओं से बेहतर प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति में रहती हैं। इसलिए यहां तक कि उपनिवेश का सबसे ऊपरी वर्ग भी उपनिवेशवाद का विरोध कर सकता है क्योंकि यह उनके हितों के खिलाफ जाता है। यह याद रखना आवश्यक है कि पोलैंड और मिस्त्र में उपनिवेशवाद के विरोध में आंदोलन का नेतृत्व बड़े भूमिपतियों ने किया था। उपनिवेशों और अर्द्ध उपनिवेशों में यह एक बड़ा अन्तर है। अर्द्ध उपनिवेशों में देशी वर्ग शासकीय वर्ग का हिस्सा होता है। अर्द्ध उपनिवेशों का उच्च वर्ग शासकीय वर्ग का हिस्सा होता है। अरूण बोस ने बिलकुल सही कहा है कि उपनिवेश में जहां साम्राज्यवादी देश का शक्तिशाली वर्ग राज्य की प्रकृति का निर्धारण करता है वहां एक अर्द्ध उपनिवेश में राज्य की वर्ग प्रकृति राजनैतिक रूप से प्रभावशाली वर्ग की प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है।

औपनिवेशिक राज्य की भूमिका पूंजीवादी राज्य से अधिक है। यह उपनिवेशवाद का निर्माण करता है। यह एक अधिसंरचना मात्र नहीं होती बल्कि आर्थिक आधार का एक हिस्सा होता है। यह न केवल शासक वर्ग को अधिशेष वसूल करने की क्षमता प्रदान करती है बल्कि स्वयं अधिशेष प्राप्त करने का एक प्रमुख जरिया होता है। पूंजीवाद के अन्तर्गत उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होने से शासक वर्ग को राज्य पर नियंत्रण और आधिपत्य रखने में मदद मिलती है। उपनिवेशवाद के तहत औपनिवेशिक राज्य पर दूसरे देश का नियंत्रण होता है और उस देश का शासक वर्ग औपनिवेशिक समाज पर नियंत्रण रखता है और उसका शोषण करता है। उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के कारण नहीं बल्कि राज्य शक्ति पर नियंत्रण स्थापित होने से सामाजिक अधिशेष पर उनका नियंत्रण कायम होता है। उदाहरण के लिए भारत में राज्य का उत्पादन के साधनों पर कोई खास मालिकाना हक नहीं था परंतु फिर भी उसके पास काफी शक्ति थी।

औपनिवेशिक राज्य कानून और व्यवस्था लागू करता था और आंतरिक तथा बाह्य खतरों से अपनी सुरक्षा करता था। औपनिवेशिक हितों को खतरा पहुंचाने वाली देशी आर्थिक शक्तियों और प्रक्रियाओं को दबा दिया जाता था। यह अधिशेष वसूली का एक जरिया था। यह उपनिवेश में रहने वाले लोगों में एकता नहीं होने देता और इसके लिए जाति, वर्ग, समुदाय आदि का प्रश्न उठा कर लोगों को एक दूसरे का विरोधी बना देता था। राज्य पूंजी वसूली की प्रक्रिया जिसमें समानों और सेवाओं का उत्पादन शामिल था के लिए माहौल बनाने में प्रयत्नशील रहता था। उपनिवेशों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और वैधानिक ढांचों को बदलना एक महत्वपूर्ण कार्य था ताकि बड़े पैमाने पर पुनरुत्पादन किया जा सके। मन के अनुकूल कार्य किया जा सके। परंतु राज्य के निगरानी कार्यों और विकासात्मक कार्यों में अन्तर्विरोध आने से समस्या पैदा हो जाती थी। मौजूदा अल्प संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती थी और इससे विकास को ही हानि पहुंचती थी। साम्राज्यवाद विरोधी ताकतों के लिए उपनिवेशवाद की शोषणात्मक प्रकृति को बेनकाब करना बहुत आसान होता था क्योंकि औपनिवेशिक ढांचे और राज्य के बीच स्पष्ट और सीधा संबंध होता थी। अत: यहां आंदोलन को राजनैतिक रूप देने में आसानी होती थी। विकासशील देशों में राज्य और अर्थव्यवस्था के बीच का संबंध इतना स्पष्ट न होने के कारण ऐसा करना मुश्किल होता था। अत: औपनिवेशिक नियंत्रण को बेनकाब करना आसान था और गृह देश के औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग से इसका संबंध स्थापित किया जा सकता था। राज्य पर विदेशियों का स्पष्ट नियंत्रण होता था और नीति तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में उपनिवेश की जनता की कोई भूमिका नहीं थी। यदि पूंजीवादी राज्य से इसकी तुलना करें तो औपनिवेशिक राज्य नेतृत्व और सहमति के बजाए आधिपत्य और दमन पर आधारित था। अतएव यहां साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियां तेजी से उभरीं। इसके बाद राज्य को संकट का समाना करना पड़ा। हालांकि सिक्के का एक दूसरा पहलू यह है कि औपनिवेशिक राज्य एक बुर्जुआ राज्य था, इसमें नियम-कानून, संपत्ति संबंध, नौकरशाही को लागू किया गया और यहां तक कि यह अर्ध-निरंकुश और अर्ध-प्रजातांत्रिक राज्य में भी विकसित हो सकता था। अतएव उपनिवेश में संवैधानिक व्यवस्था की गुंजाइश होती था।

औपनिवेशिक विचारधारा के प्रश्न पर अभी तक पर्याप्त रूप में विचार नहीं किया गया है। अलग-अलग चरणों से अलग-अलग विचारधाराएं जुड़ी हैं – दूसरे चरण में इसका संबंध विकास से था और तीसरे चरण में अ-राजनीतिकरण और सद्भावना से जुड़ा था। जब बहिष्कार की नीति राजनीति में काम नहीं करती तो निष्ठावान राजनीति को बढ़ावा दिया जाता है।

21.7 उपनिवेशवाद के चरण

मार्क्स ने अपनी पुस्तक में उपनिवेशवाद के दो चरण बताएं हैं – एकाधिकार व्यापार और मुक्त व्यापार। अपनी प्रमुख पुस्तक *इंडिया टू डे* में रजनी पाम दत्त ने इसमें एक तीसरा चरण जोड़ा है जिसे वित्तीय साम्राज्यवाद कहा है और यह लेनिन के दर्शन पर आधारित है। समीर आमीन और कुछ विद्वानों के अनुसार यह तीसरा चरण ही उपनिवेशवाद को जन्म देता है। विभिन्न चरण अपने शुद्ध रूप में मौजूद नहीं होते और न ही इन चरणों के बीच कोई बहुत भेद होता है। प्रत्येक उपनिवेश में इन चरणों की समयावधि में अन्तर होता है। कुछ देश केवल एक या दो चरणों से ही गुजरते हैं; या वहां अन्य चरण घुले-मिले हुए होते हैं। उदाहरण के लिए भारत में तीसरे चरण की शुरुआत नहीं हो सकी जबकि मिस्र में पहले और दूसरे चरण एक दूसरे में मिले हुए थे और इन्डोनेशिया में दूसरा चरण ही देखने को मिलता है।

उपनिवेशवाद विश्व पूंजीवाद के साथ उपनिवेश की अर्थव्यवस्था और समाज का सम्पूर्ण परंतु जटिल गठजोड़ और एकीकरण है जो विभिन्न चरणों से उभरता हुआ दो शताब्दियों तक कायम रहा था। समय के साथ-साथ अधीनता का स्वरूप बदलता रहता है परंतु उपनिवेश की अधीनता बरकरार रहती थी। जैसे ही अधिशेष वसूली या अधीनता का स्वरूप बदलता था उसी तरह औपनिवेशिक नीति, राज्य और इसकी संस्थाएं, संस्कृति, विचार और विचारधाराएं भी बदलती रहती थीं। ये चरण विश्व व्यवस्था के रूप में पूंजीवाद के ऐतिहासिक विकास का परिणाम थे। वे साम्राज्यवादी देश के सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक विकास के बदलते स्वरूपों तथा विश्व अर्थव्यवस्था तथा राजनीति का भी परिणाम थे। उपनिवेश का अपना ऐतिहासिक विकास भी चरण के स्वरूप को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

21.7.1 पहला चरण

इस चरण के दो आधारभूत उद्देश्य थे :

व्यापार पर एकाधिकार। उदाहरण के लिए, ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा भारतीय माल सस्ते में खरीदने के लिए व्यापार पर एकाधिकार आवश्यक था। युद्ध के जरिए यूरोपीय प्रतिस्पर्धियों को दूर रखा गया। भारतीय व्यापारियों को लाभपूर्ण व्यापार से वंचित करने के लिए राजनैतिक स्तर पर क्षेत्रों को जीत कर उन पर अधिकार जमाया गया।

राज्य शक्ति का उपयोग कर राजस्व या अधिशेष की सीधी वसूली की जाती थी। यूरोपीय शक्तियों और देशी राजाओं के खिलाफ युद्ध करने के लिए बड़ी मात्रा में धन की जरूरत होती थी। यह धन उपनिवेश के राजस्व से ही प्राप्त किया जा सकता था। उपनिवेश से वसूले गए राजस्व से औपनिवेशिक वस्तुएं भी खरीदी जाती थीं। इसका प्रमुख कारण यह था कि साम्राज्यवादी देश स्वयं कई जरूरत की वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते थे और उपनिवेशों से खरीदे गए माल के लिए सोने और चांदी में भुगतान करना उस समय के वाणिज्यवादी सोच के अनुकूल नहीं था। उपनिवेशों पर राजनैतिक आधिपत्य स्थापित करने के बाद उनका शोषण किया गया तथा उनके अधिशेष पर अधिकार कर लिया गया। उपनिवेश से प्राप्त राजस्वों से पदाधिकारियों को ऊंचे वेतन दिए गए और कम्पनियों तथा निगमों ने मुनाफे कमाए। यह माना जाता है कि प्रथम चरण में भारत से ब्रिटेन को होने वाले धन का अपवहन काफी ज्यादा था। यह उस समय ब्रिटेन की राष्ट्रीय आय का 2% से लेकर 3% तक था।

यह अवश्य याद रखना चाहिए कि प्रशासन, न्यायिक व्यवस्था, परिवहन और संचार के साधन, कृषीय और औद्योगिक उत्पादन के तरीकों, व्यवसाय प्रबंधन या आर्थिक संगठन के रूप, शिक्षा या बौद्धिक क्षेत्र, संस्कृति और सामजिक संगठन में कोई आधारभूत परिवर्तन नहीं किया गया। परिवर्तन केवल सैन्य संगठन और प्रौद्योगिकी तथा राजस्व प्रशासन के ऊपरी हिस्से में किया गया। हस्तक्षेप न करने का कारण यह था कि प्रथम चरण में उपनिवेशवाद परम्परागत अर्थव्यवस्था और राजनैतिक व्यवस्था पर अध्यारोपित कर दिया गया था। यदि आर्थिक अधिशेष वसूलने में परेशानी नहीं थी तो पहले के शासकों द्वारा जितना गांवों को केंद्रीय अर्थव्यवस्था से जोड़ लिया गया था उससे अधिक उपाय करने की जरूरत नहीं थी। उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था या राजनैतिक ढांचे में किसी प्रकार का आधारभूत रूपांतरण करना अनिवार्य नहीं था। इसलिए इस विचारधारा में विकास के लिए कोई स्थान नहीं था और परम्परागत मूल्यों, धर्म, रीति रिवाज, मान्यताओं

की समझ और आलोचना की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। अध्ययन की परम्परागत प्रणालियों को प्रोत्साहित किया गया और देशी भाषाओं में प्रशासन का काम काज चलाया गया।

27.7.2 दूसरा चरण

उपनिवेशवाद के दूसरे चरण को मुक्त व्यापार के नाम से जाना जाता है। औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग , जिसने व्यापारिक कम्पनियों का स्थान ले लिया, ने शोषण कर अधिशेष की वसूली करने के तरीके का इस आधार पर विरोध किया कि सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को बचा कर रखना जरूरी है। साम्राज्यवादी देशों के औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग का हित उपनिवेश में इसलिए था कि वहां उनके तैयार माल का बाजार मौजूद था। इसके लिए उपनिवेश से निर्यात का बढ़ना जरूरी था ताकि आयातित तैयार माल को वे खरीद सकें। साम्राज्यवादी देश का बुर्जुआ वर्ग उपनिवेशों को कच्चा माल के उत्पादक के रूप में विकसित करना चाहता था ताकि अपने साम्राज्य के बाहर के स्रोतों पर उसे निर्भर न रहना पड़े। उपनिवेश से निर्यात बढ़ने से इन्हें ऊंचे वेतन देने और व्यापारियों को अधिक मुनाफा देने में भी सहूलियत हुई। व्यापार को सामाजिक अधिशेष प्राप्त करने का माध्यम बनाया गया।

नए तरीके से शोषण करने के लिए आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैधानिक ढांचों को रूपांतरित करना जरूरी था। इसके लिए विकास और आधुनिकीकरण का नारा दिया गया। उपनिवेश को विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और मातृ राष्ट्र से जोड़ा गया। विदेशी व्यापार पर सारे प्रतिबंध और शुल्क हटा लिए गए। पूंजीपतियों को खेती करने, व्यापार करने और परिवहन, खनन और उद्योग के क्षेत्र में कार्य करने की छूट दी गई। पूंजीवादी खेती की शुरुआत की गई। कच्चे मालों को बन्दरगाहों से बड़ी मात्रा में निर्यात करने के लिए रेलवे का विस्तार किया गया और आधुनिक डाक और तार व्यवस्था स्थापित की गई। प्रशासन का विस्तार किया गया ताकि आयातित माल आसानी से गांवों में भेजा जा सके और वहां से कच्चा माल निकाला जा सके। पूंजीवादी-वाणिज्यिक संबंध लागू किए गए। अनुबंधों को वैधता प्रदान करने के लिए वैधानिक व्यवस्था में सुधार किया गया। हालांकि व्यक्तिगत कानून में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। नए प्रशासन को संभलने के लिए आधुनिक शिक्षा लागू की गई। यह उम्मीद की गई थी कि पश्चिमीकरण से आयातित वस्तुओं की मांग बढ़ेगी।

राजनैतिक विचारधारा के क्षेत्र में उदारवादी साम्राज्यवाद पर विशेष बल दिया गया। उपनिवेश के लोगों को स्वशासन सिखाने के लिए यह दृष्टिकोण सामने आया। यह विश्वास जाहिर किया गया कि औपचारिक राजनैतिक नियंत्रण समाप्त होने के बावजूद आर्थिक संबंध कायम रहेंगे। आधुनिकीकरण की इस अवधारणा के साथ-साथ मौजूदा सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक शैलियों की आलोचना की गई। विकास को विचारधारा के रूप में सामने रखा गया। इसके पीछे मंशा यह थी कि देश को जानबूझकर अल्पविकसित न रखा जाए। अल्पविकास को उद्देश्य नहीं बनाया गया परंतु उपनिवेशवाद के तहत बाजारों की कार्य पद्धति और इसके आन्तरिक अन्तर्विरोधों के परिणामस्वरूप यही होना था। अतएव अल्पविकास का नहीं बल्कि केवल विकास का ही साम्राज्यवादी सिद्धांत मौजूद था।

21.7.3 तीसरा चरण

19वीं शताब्दी के मध्य तक विश्व पूंजीवादी प्रकृति में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। दुनिया में इंगलैंड के अलावा अन्य देशों में भी औद्योगीकरण फैला और ब्रिटेन की सर्वोच्चता समाप्त हुई। बाजार, कच्चे माल और खाद्यान्न के स्रोतों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई। काफी पूंजी जमा हो गई और इसे निवेशित करने के लिए अच्छे और लाभप्रद अवसरों की तलाश की जाने लगी। जिन देशों के पास उपनिवेश थे वे बेहतर स्थिति में थे क्योंकि इन क्षेत्रों पर उनका एकाधिकार था। इसके अलावा अपने घरेलू राजनैतिक असंतोष से लोगों का ध्यान हटाने और आपस में संघर्षरत सामाजिक वर्गों के हितों को एक साथ जोड़ने के लिए साम्राज्य और इसकी प्रतिष्ठा का इस्तेमाल किया जाता था।

उपनिवेशवाद के तीसरे चरण में उपनिवेश पर नियंत्रण अत्यंत सघन हो गया। प्रतिक्रियावादी विचारधारा को प्रोत्साहन दिया गया। प्रशासन व्यापक और कुशल हो गया तथा नौकरशाही का नियंत्रण बढ़ा दिया गया क्योंकि सघन नियंत्रण के लिए यह आवश्यक था। इस समय स्वशसान की बात नहीं की गयी। इसके स्थान पर सद्भावपूर्ण तानाशाही नई विचारधारा के रूप में सामने आई। इसके अनुसार औपनिवेशिक जनता को

एक शिशु के रूप में देखा गया जिसके लिए हमेशा एक अभिभावक की जरूरत थी। द्वितीय चरण में जिस आधुनिकीकरण और पश्चिमी शिक्षा की बात की गयी थी तीसरे चरण में उसका कोई जिक्र नहीं था।

उपनिवेशवाद के भीतर दो प्रकार का अन्तर्विरोध था - एक बाहरी था, जो उपनिवेश के लोगों और व्यवस्था के बीच था जो साम्राज्यवादी विरोधी आंदोलनों के रूप में प्रकट हुआ। दूसरा आन्तरिक अन्तर्विरोध था - जिसमें उपनिवेश द्वारा साम्राज्यवादी देशों के पूंजीपति वर्ग के हितों की पूर्ति कर पाने में असमर्थ होना था। तीसरे चरण में साम्राज्यवादी देशों की पूंजी का इस्तेमाल कर पाना या कच्चे माल के निर्यात को बढ़ाना संभव नहीं था। इस कारण से सीमित आधुनिकीकरण की नीति लागू की गई। उपनिवेशवाद की अवधारणा में निहित अंतर्विरोध सामने आए तथा अल्प विकास ने उपनिवेश के शोषण में बाधा पहुंचाई।

तीसरे चरण की स्थिति उपनिवेशवाद के अन्तर्गत सामान्यत: नहीं उत्पन्न होती। अधिकांश पुराने उपनिवेशों से पूंजी का निर्यात किया जाता रहा। इसका एक प्रमुख कारण यह था कि उपनिवेशवाद में इन उपनिवेशों की अर्थव्यवस्थाओं को इतना खोखला कर दिया जाता था कि उनमें पूंजी निवेश का सही उपयोग करने की क्षमता नहीं रह जाती थी। उपनिवेशवाद द्वारा उपनिवेशों की सारी क्षमताओं का दोहन किए जाने पर नव स्थापित उद्योगों में बने मालों की मांग कैसे संभव थी। अभी तक उन उत्पादों में पूंजी निवेशित की जा रही थी जिसके लिए विदेश में बाजार उपलब्ध था या निर्यातों के लिए आवश्यक अधिसंरचनाओं में पूंजी निवेशित की गई। कई उपनिवेशों में शोषण के पुराने रूप जारी रहे। उदाहरण के लिए भारत में तीसरे चरण में भी पिछले दो पुराने रूप मौजूद रहे।

बोध प्रश्न 2

1) औपनिवेशिक राज्य की खास विशिष्टताएं क्या हैं? लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) प्रथम चरण और द्वितीय चरण में उपनिवेशवाद में क्या अंतर होता है ?

....

....

....

....

....

....

21.8 सारांश

यूरोपीय शक्तियों द्वारा औपनिवेशिक आधिपत्य और इन उपनिवेशों को आधुनिक विश्व से जोड़नेवाली अर्थव्यवस्था पर विचार किए बिना आधुनिक यूरोप का इतिहास अधूरा रहेगा। इस व्यवस्था को उपनिवेशवाद के नाम से जाना जाता था। एक ओर यूरोप इन उपनिवेशों से प्राप्त अधिशेष के आधार पर प्रगति और

समृद्धि के पथ पर अग्रसर हो रहा था वहीं औपनिवेशिक शासन के अधीनस्थ क्षेत्र दिन प्रति दिन पिछड़ते चले गए। औपनिवेशिक आधिपत्य के परिणामस्वरूप विश्व का अधिकांश हिस्सा अल्प विकसित रह गया।

21.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उत्तर के लिए भाग 21.2 देखिए।

2) उत्तर के लिए भाग 21.2 और 21.5 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 21.6 देखिए।

2) भाग 21.7 देखिए।